



International Journal of Multidisciplinary Research and Development



Volume: 2, Issue: 7, 156-158
July 2015
www.allsubjectjournal.com
e-ISSN: 2349-4182
p-ISSN: 2349-5979
Impact Factor: 3.762

इन्द्राणी सिंह

वर्धमान विश्वविद्यालय में गवेषणारता
मानकर महाविद्यालय में अतिथि
अध्यापिका

बौद्धधर्म की अष्टांगिकमार्गः एक आधुनिक दृष्टिकोन लोकजीवनचर्या में

इन्द्राणी सिंह

समाज के चिन्ताशील मनुष्य का जीवन जब वैदिक ज्ञानकाण्ड, कर्मकाण्ड और जडवादी भावधारा में प्रभावित हो रहे थे तब ही इस से स्वतन्त्र-भिन्न एक दार्शनिक परिमण्डल का सूचना हुआ जिन्हे हम बौद्धदर्शन के रूप में जानते हैं। बौद्धदर्शन एक नास्तिक दर्शन है। नास्तिक अर्थात् इस दर्शन ने 'वेद' नामक प्राचीन धर्मग्रन्थ को स्वीकार नहीं किया। फिर भी बौद्धत्व हमारे मानवजीवन को वास्तविकता की उँचाई पर ले जाते हैं। प्रत्येक भारतीय लोकजीवन का मार्ग भिन्न है। परन्तु सभी का एक ही लक्ष्य है अपना परलोक सुधारना एवं मोक्ष या निर्वाण की प्राप्ति करना। इस विषय में बौद्धों का अष्टांगमार्ग का बहुत ही महत्त्व है। साधारणरूप से दार्शनिक जिन्हें हम केहेते हैं उस अर्थ से बुद्धदेव जी दार्शनिक नहीं थे। बुद्ध मुख्यरूप से एक नैतिक शिक्षक और चारित्रिक संशोधनकार भी थे। 'एतन्कीर्तपीदंद जी ने काहा है की- **“The Buddha was accepted as an avatara who reclaimed Hindus from sanguinary rites and erroneous practices and purified their religion from the numerous abuse which had crept into it.”**¹

बुद्धदेव जी साधना में सिद्धिप्राप्त करने के बाद सत्यद्रष्टा हुये हैं। इस साधना के कारण बुद्धदेव जी यो आध्यात्मिक अभिज्ञता लाभ किये थे वो 'चत्वारि आर्यसत्यानि' या 'आर्यसत्य चतुष्टय' नाम में परिचित हैं। आर्यसत्य चतुष्टय- दुःख अर्थात् जगत् दुःखमय, दुःख समुदय अर्थात् दुःख का कारण है, दुःख निरोध अर्थात् दुःख का निवारण संभव एवम्, दुःख निरोधमार्ग अर्थात् दुःख का निवारण करने का उपाय भी है। 'आर्य' शब्द का आभिधानिक अर्थ है 'श्रेष्ठ' या 'महान'। अर्थात् इस सत्य समूह साधारण या अपेक्षिक नहीं है। मनुष्य के व्यवहारिक जीवन में अनुभव किये गये दुःख ही परमार्थसत् एवम् इस दुःख से मुक्ति के लिये आर्यसत्य चतुष्टय का उपदेश दिये हैं। आर्यसत्य के सम्यक् ज्ञान अर्थात् जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में इनका सही तरहा स्वांगीकरण करने से अविद्या का निवारण एवम् अविद्या के निवारण से दुःख का परिसमाप्ति होते हैं। बुद्धदेव जी कहेते हैं- **“Pain is certain, suffering is optional.”** ।

प्रथम आर्यसत्य -दुःख : बुद्धदेव जी समझते थे जगत् और जीवन दुःखमय - 'सर्वं दुःखम् दुःखम्'²। इस जगत्-संसार का सबकुछ ही क्षणस्थायी अर्थात् अनित्य है। अविद्या के कारण जागतिक वस्तुसमूह को हम स्थायी मानते हैं। परन्तु क्षणिक, अनित्यवस्तु नित्य सुखदायी नहीं होते हैं। जागतिक अनित्यवस्तु मात्र ही दुःखदायी है। कुछ ना पाने का दुःख, कुछ खोने का दुःख, कुछ अधिक पाने का दुःख, कुछ कम पाने का दुःख। जन्म से मृत्यु तक का सफर दुःख से ही भरा हुआ है। यो हमारे अनुकुल होते हैं उससे हमें सुख मिलते हैं और यो हमारे प्रतिकुल होते हैं उससे दुःख मिलते हैं। प्रिय वस्तु का वियोग येसे हमें दुःख देते हैं उसी तरहा अप्रिय सान्निध्य भी वेदनादायक है- **“पियानं अदस्सनं दुक्खं अप्पियानञ्च दस्सनं”**³। अतृप्त कामना, भोग-लालसा, इन्द्रियसमूह सब ही यन्त्रनादायी हैं। प्रत्येक सुख के भितर दुःख का बीज हमेशा रहते हैं।

द्वितीय आर्यसत्य- दुःख समुदय अर्थात् दुःख का कारण है : हम क्यों दुःख भोग करते हैं? इस का उत्तरस्वरूप बुद्धदेव जी ने कौहा है की जगत् में प्रत्येक घटना का ही कारण है। कारण विना कार्य सम्भव नहीं है। दुःख एक घटना है। इसिलिये दुःख का भी कारण है। दुःख का कारण जानने से दुःख का निवारण भी संभव होगा। द्वादश संयोगसूत्र यो दुःख का कारणस्वरूप है- अविद्या, संस्कार, चेतना या विज्ञान, नामरूप, षडायतन, स्पर्श, वेदना, तृष्णा, उपादान, भव, जाति, जरामरण। इनमें से अविद्या ही दुःख का मूल कारण है। अविद्या वस्तु का प्रवृत्त स्वरूप को उपलब्धि ना कर पाने के कारण मनुष्य तृष्णा से मुक्त नहीं हो पाते एवम् पुनः पुनः जन्मचक्र में पतित होकर दुःख से भी निकल नहीं पाते।

तृतीय आर्यसत्य- दुःख निरोध अर्थात् दुःख का निवारण संभवः जिस वस्तु का उत्पत्ति है उसका विनाश अनिवार्य है। बुद्धदेव जी के अनुसार दुःख का निरोध संभव है। क्योंकि दुःख एक उत्पत्तिशाली कार्यवस्तु है इसिलिये दुःख का विनाश संभव 'सुभाषितानि' हमें ये शिक्षा देते हैं 'चक्रवत् परिवर्तन्ते दुःखानि च सुखानि च'⁴ अर्थात् दुःख स्थायी नहीं है। यदि दुःख है तो उसे निवारण करने का उपाय भी होगा। द्वितीय आर्यसत्य में दुःख का कारणस्वरूप हमें यो द्वादश संयोगसूत्र मिला है उसमें से अविद्या ही है दुःख का आदि कारण। इसका

Correspondence:

इन्द्राणी सिंह

वर्धमान विश्वविद्यालय में गवेषणारता
मानकर महाविद्यालय में अतिथि
अध्यापिका

“दुःखं दुःखसमुत्पादं, दुःखस्स च अतिक्कं मं ।
अरियं चट्ठङ्गिकं मग्गं, दुःखूपसमगामिनं ॥”⁹

तथ्यसूत्र

1. थ्वतमूवतकए2500 लमंते वीठनककीपेउ
2. बौद्धदर्शनम् 23
3. धम्मपद धपियवग्गो श्लोक 2
4. सुभाषितानि श्लोक 3
5. धम्मपद 7
6. यजुर्वेदः 34-1
7. तैत्तिरीय उपनिषद् एकादश अनुवाक 1
8. धम्मपद ध्वुद्धवग्गो श्लोक 12
9. धम्मपद ध्वुद्धवग्गो श्लोक 13

सहायक ग्रन्थसूची

1. भट्टाचार्य, अमित ; सम्पादक द्व। सायण माधवीय सर्वदर्शनसंग्रह ; अखण्ड संस्करण द्व चार्वाक- बौद्ध- जौनदर्शन। कलकाता : संस्कृत पुस्तक भाण्डार, 2013।
2. मण्डल, नीलिमा। भारतीय दर्शन परिचय। कलकाता : प्रग्रेसिभ पावलिशार्स, 2011
3. मण्डल, प्रद्योत कुमार ; सम्पादक द्व। भारतीय दर्शन। कलकाता : प्रग्रेसिभ पावलिशार्स, सेप्टेम्बर 2014
4. वसु, चारुचन्द्र ; सम्पादक द्व। धम्मपद। कलकाता : महाबोधि बुक एजेन्सी, 1999
5. विद्यारण्य, स्वामी। बौद्धदर्शन और धर्म । पश्चिमवङ्ग राज्य पुस्तक पर्षद : 1984
6. शास्त्री, पञ्चानन ; सम्पादक द्व। बौद्धदर्शनम्। कलकाता : नव भारत पावलिशार्स, 1401